रजनी सेखरी सिबल

सूरजमुखी

चित्रण : सत्यराज अय्यर

आलोक प्रकाशन

आज की कहानी सूरजमुखी की है. सूरजमुखी, जिसे हम अंग्रेज़ी में सनफ्लावर कहते हैं. बाम्टनिस्ट इसे ‘हेलीयंतस’ कहते हैं. ‘सूरज', ‘सन’ और ‘हेलियोस' तीनो सूर्य के ही नाम हैं. सूरजमुखी का फूल सूर्य का घनिष्ट मित्र है. सबसे बेस्ट फ्रेंड. सूरज की तरह सूरजमुखी का फूल भी खूबसूरत पीले रंग का होता है.

जैसे-जैसे पूरे दिन में सूरज पूरब से पश्चिम पहुँचता है वैसे ही सूरजमुखी का फूल सुबह के समय पूरब की तरफ अपना चेहरा करता है और शाम तक धीरे-धीरे सूरज के साथ-साथ पश्चिम की तरफ अपना चेहरा घुमा लेता है.

बहुत साल पहले ग्रीनलैंड नाम के टापू पर एक सूरजमुखी का छोटा सा झुण्ड रहता था. हालांकि ग्रीनलैंड नाम का अर्थ है, हरा देश या हरियाली वाला देश लेकिन वहां इतनी ठण्ड होती है, इतनी सर्दी होती है कि हरियाली का तो नामोनिशान नहीं है. गर्मी में कभी-कभार थोड़ी घास उगती है. लेकिन ज्यादातर यह देश बर्फ से ढंका रहता है. नार्थ पोल के पास उत्तर दिशा में ये ग्रीनलैंड टापू स्थित है. तो, सूरजमुखी के फूलों का एक झुण्ड वहां रहता था.

उस झुंड की जो लीडर या मुखिया थी वो एक दादी माँ थी. दादी माँ से उसके सारे 250 बच्चे और करीब 4000 नाती-नातिन, पोती-पोते सब बहुत ही प्यार करते थे. अब चूँकि वहाँ सूरज बहुत कम आता था, सर्दियों में बहुत तेज बर्फ पड़ती थी, ठंडी हवाएं चलती थीं, तो जितनी देर भी दिन में सूरज आता था, चाहे 1 घंटा, आधा घंटा, कुछ मिनिट के लिये उतनी देर ही सूरज की ऊर्जा को लेकर सूरजमुखी के फूलों का झुण्ड अपने आप को जिंदा रखता था. दादी चूंकि बड़ी थी, तो उनके लिए इतनी सी धूप काम पड़ती थी. नवंबर के महीने में एक दिन दादी ठण्ड में ठिठुर रही थीं. उनके हाथ काँप रहे थे. वे बच्चो को बुलाकर कहने लगीं कि - "भई मैं तो बहुत बुजुर्ग हो गयी हूँ, अब तुम लोग तो मुझे यहीं दफना दो. मुझसे से इतनी ठण्ड बर्दाश्त नहीं होती. 5 - 10 मिनट के सूरज से मुझे ऊर्जा नहीं मिलती. मैं तो मर ही जाऊंगी एक दिन."

अब दादी के जितने बच्चे थे, जितने पोते-पोतियां, नाती-नातिन थे, सब बहुत उदास हो गए. बहुत परेशान हो गए. उन्होंने रात को एक सभा की, और सभा में तय किया कि कुछ भी हो जाये, हम अपनी दादी से इतना प्यार करते है कि हम दादी को नहीं दफनायेंगे. हम दादी को सूरज की तरफ ले चलेंगे.

तो ये तय हुआ कि अगले दिन जब बादलों को चीर कर थोड़े समय के लिए सूरज ग्रीनलैंड में आएगा तो उस समय, सभी सूरजमुखी के फूल, ऊर्जा इकट्ठी करके थोड़ा हिलेंगे-डुलेंगे और अपनी जड़ों को भी जमीन में थोड़ा हिलाएंगे. जैसे ही हवा का बगला झोंका आयेगा, जड़ों को हिलाकर, सब एक दूसरे का हाथ पकड़ कर हवा के साथ निकल पड़ेंगे, सूरज की तलाश में.

अब ये भी तय हुआ कि सभी सूरजमुखी के फूल एक गोल घेरा बनाएंगे और एक दूसरे का हाथ पकड़ेंगे, क्योंकि हाथ पकड़ने में और साथ चलने में ही सब सशक्त होते हैं. सबको शक्तिशाली बनना है तो ऐसा ही करना होगा. वरना अकेले तो कोई न कोई, कहीं न कहीं खो जायेगा. अब सभी ने गोल घेरा बनाया, हाथ पकड़े और हाथ पकड़कर बीच में दादी को लिटा दिया. जैसे ही हवा का झोंका आया वे तेज हवा के झोंके के साथ बादल के ऊपर जाकर बैठ गए.

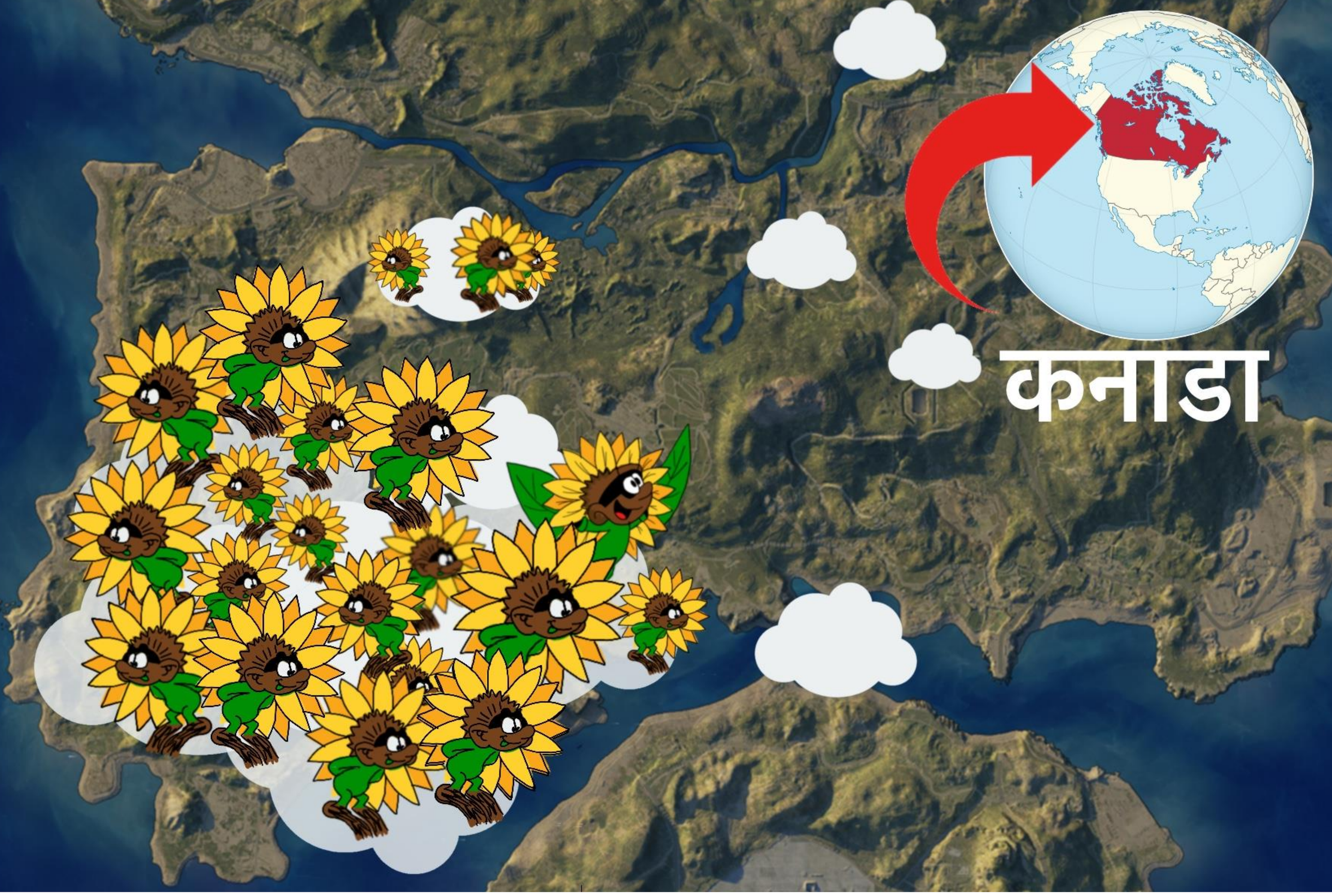

अब बादल उनको पश्चिम दिशा की तरफ ले गया, कैनाडा की ओर. रास्ते में बहुत बड़ा समुद्र आया और जितने छोटे बच्चे थे वे नीले समुद्र को देख कर खुश हो गए. लेकिन जो बड़े थे थोड़ा सा घबरा भी रहे थे, कि अगर बादल तितर-बितर हो गया तो जाने हम सब समुद्र में गिरकर हमेशा के लिए लुप्त हो जायेंगे, मर जायेंगे. लेकिन ऐसा नहीं हुआ. एक दूसरे का हाथ थाम कर ये सब लोग बादल के साथ कनाडा में जाकर उतर गए.

अब नया देश, नए पेड़, नये पौधे, नई किस्म की घास. इनको घबराहट हो रही थी कि हम कहा आ गए है. लेकिन चूंकि वे इकट्ठे थे, तो उन्होने अपनी जड़ों को जमाया और थोड़ी देर के लिए रुक गए, कनाडा में. अब कैनाडा में ग्रीनलैंड से तो अच्छा मौसम है, लेकिन ठण्ड तो भैया वहां भी बहुत होती है. नवम्बर-दिसंबर में तो बहुत ही ज्यादा. खूब तेज आंधी चलती है, बरफ गिरती है, ठंडी हवाएं होती हैं. दादी का तो फिर से बुरा हाल होने लगा. वे बोलीं - "भई तुम लोग मुझे घर से इतनी दूर ले आये हो और कहां-कहां हम बादलों के ऊपर से घूमकर आये हैं, लेकिन अभी भी यहां तो बहुत ठण्ड है. सूरज तो निकलने का नाम ही नहीं लेता."

तो फिर से एक सभा बुलाई गई. सबने कहा कि अब हम निकल तो पड़े, देखा हैं. अगर एक साथ एक दूसरे का हाथ पकड़ते हैं तो हम सशक्त हो जाते हैं. पहले की तरह इस बार हम फिर निकलेंगे, कल सुबह. हाथ थाम कर, एक बड़े बादल पर बैठ कर चलते जायेंगे सूरज के साथ. सूरज की किरणों का पीछा करते-करते वहां जायेंगे जहां पर कभी धूप थमती नहीं है.

अब ये सोच से अगले दिन फिर से
सूरजमुखी के फूलों ने गोल घेरा बनाया,
एक दूसरे का हाथ पकड़ा और बीच में
दादी को लिटाकर हवा के झोंके के साथ
उड़कर बादल पर बैठ गए.

वो बादल दक्षिण दिशा की ओर निकल गया. जहां-जहां सूरज जा रहा था उसके पीछे-पीछे सूरजमुखी के फूल हो लिए और एक बिल्कुल खाली जगह पर पहुंचे. वहां दिन भर सूर्य रहता था. उस जगह का नाम था न्यू मैक्सिको.

न्यू मैक्सिको पहुंचकर सूरजमुखी का झुण्ड नीचे उतर गया. उतर कर अपनी जड़ों को फैलाने लगा. वहां पर दिन भर धूप में दादी भी खुश थी. सभी लोग खुश थे. दादी में थोड़ी जान आयी तो वह पुरानी कहानियां सुनाने लगी. बच्चे आसपास खेलने लगे. धीरे-धीरे पूरे न्यू मैक्सिको में सूरजमुखी के फूल फैल गए.

न्यू मैक्सिको में इंकास नाम की जनजाति के लोग रहते हैं. उनको लगा कि ये पीले फूल जाने कहा से आये हैं. जब भी इनको देखते है, जहाँ भी देखते है ये खुशियां फैलाते हैं. इन्हें देख कर आँखों को कितना अच्छा लगता है. तो उन्होंने उसे “खुशियों का फूल” कहना शुरू कर दिया और भगवान के मंदिरों में सूरजमुखी के फूलों से पूजा करनी शुरू कर दी.

अब जैसे-जैसे समय बीतता गया, सूरजमुखी के फूलों की हिम्मत तो अब बढ़ गयी. तो उन्हें लगा कि अगर जब तक हम एक दूसरे का साथ देते हैं, एक दूसरे का हाथ पकड़ते है तो हमें कुछ नहीं होगा. और जब भी नया बादल उन्होंने देखा, जैसे ही हवा का झोंका आया तो एक झुण्ड सूरजमुखी का निकल जाता है किसी नये देश के लिये. और इस तरह पूरे संसार में, पूरे वर्ल्ड में ये सब सूरजमुखी के फूल फैल गये.

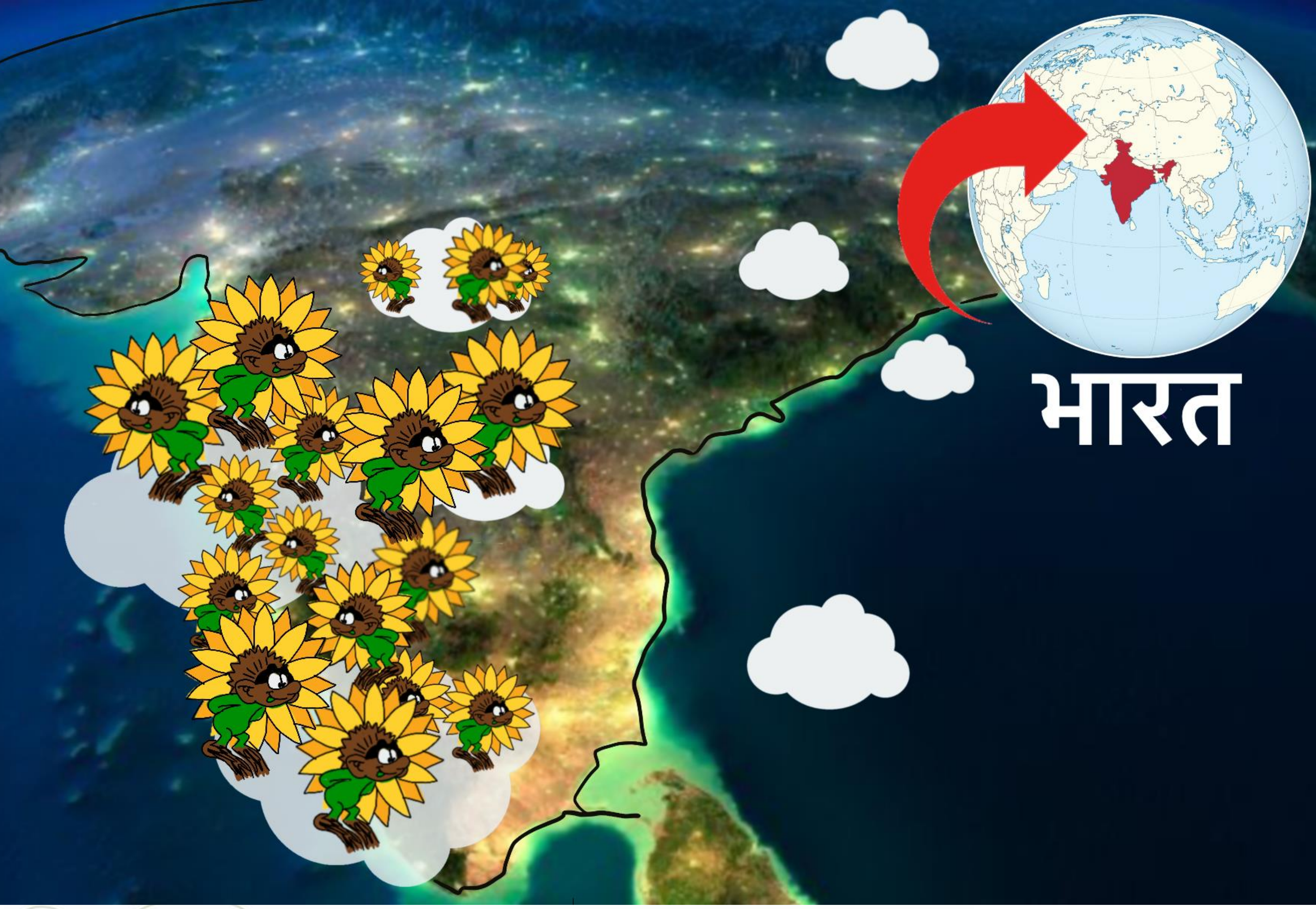

सूरतमुखी के फूलों का एक झुंड हमारे भारत में भी आया और भारत में आकर उतर गया नीचे जमीन पर, हमारे देश में.

और हमारे यहां भई माना गया कि जब भी कभी आपको किसी को ‘गेट वेल सून’ कहना है या कहना है कि ‘मैं आपके लिए बहुत चिंतित हूँ’ और ‘आपको पसंद करता हूँ’ तो सूरजमुखी के पौधे को उनके आँगन में लगा देने से खुशियां फैलती हैं. तो किसी की शादी में, किसी बच्चे के पैदा होने पर, किसी त्यौहार में, जहां कहीं भी कोई अच्छा समय है या खुशिया मनायी जा रही हैं, सूरजमुखी का फूल होना तो बहुत ही जरुरी है.

और आज भी जैसे ही सूरज उगता है तो उसके साथ ही सूरजमुखी का फूल अपनी पंखुड़ियों को खोल देता है. जैसे-जैसे सूरज पूरब से पश्चिम की ओर चलता है, वैसे-वैसे सूरजमुखी अपने चेहरे को सारा दिन सूरज की ओर घुमाता रहता है. और शाम को पश्चिम में जाकर सूरज की तरफ देखते हुए सो जाता है.

अगर आपको, दादी, नानी, पिताजी, माँ या किसी दोस्त से कहना है कि मैं चाहता हूँ की आप सदा खुश रहें, महकते रहें, चहकते रहें, तो उनके आँगन में एक सूरजमुखी का फूल लगा देना. इससे बहुत खुशियां फैलती हैं.

रजनी सेखरी सिब्बल भारतीय प्रशासनिक सेवा की 1986 बैच की टापर हैं और कुछ समय पहले भारत सरकार में सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुई हैं। उन्हें उनकी प्रतिबध्दता और साहस के लिये वर्ष 2013 में 'अनसंग हीरो' कैटेगरी में इंडियान ऑफ द इयर का पुरस्कार मिला है।

रजनी ने भारत सरकार में मत्सय पालन विभाग की सचिव एवं उसके पूर्व गृह मंत्रालय तथा कौयाल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय में अपर सचिव के रूप में काम किया है। वे कृषि मंत्रालय में संयुक्त सचिव थीं तथा मैक्स इंडिया हैल्थ इंश्योरंस में संचालक थीं। उन्होने हरियाणा सरकार में भी विभिन्न पदों पर सेवा दी है।

रजनी मनोविज्ञान तथा अर्थशास्त्र में स्नाकोत्तर उपाधि प्राप्त हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें प्रमुख हैं: *'Tools for Monitoring'; 'Clouds End and Beyond'; 'Kamadhenu'; 'Fragrant Words'; 'Are You Prepared for a Disaster?'; 'The Haunting Himalayas'*.

Email: rajnisekhrisibal@gmail.com